सुहाग्रिणि सा ई, जा पिर परिची कई पांहिंजी,
बिना हार सींगार जे, खसम खे भाई,
केहिड़ी ग़णियां मुख सां, तंहिंजी वड़ाई,
सामी सदाई, मिली रहे महबूब सां.

सुहागिन (भक्तिन) स्त्री के लक्षण बतलाते हुए सामी जी कहते हैं कि वही सच्ची सुहागिन है, जिसने अपने प्रियतम परमेश्वर को प्रसन्न कर अपना बना लिया है। पति की भक्ति करने वाली ऐसी ही स्त्री पति को भाती है। ऐसी स्त्री चाहे शृंगार नहीं भी करे, तो भी पति को वह अच्छी लगती है। ऐसी निष्ठावन पतिव्रता सुहागिन की मैं कितनी और कैसे स्तुति करूं ? ऐसी सुहागिन (भक्तिन) सदा ही अपने प्रियतम पति के संग रहती है।

'सुहागिन' का अर्थ है सौभाग्यवती, जिसका स्वामी जीता हो अर्थात् सधवा स्त्री। अध्यात्म अथवा भक्ति के क्षेत्र में परमात्मा को अपना पति मान कर उससे प्रेम करना, भक्ति करना माधुर्य भाव वाली भक्ति है। इस प्रकार की भक्ति के लिए समर्पण का भाव अनिवार्य है। परमेश्वर रूपी पति के प्रेम में सराबोर/आप्लावित होकर स्वयं को भुला कर प्रियतम पति के साथ रहने वाली स्त्री सुहागिन कही जाती हैं। सीता, सती सावित्री, मीराबाई और राबिया आदि ऐसी ही सुहागिन स्त्रियाँ हैं। ये सभी प्रियतम परमेश्वर से विलग होकर रहना नहीं चाहती। गोपियाँ भी इसी श्रेणी में आती है। इन सबके लिए पति परमेश्वर का विरह असह्य है।

महाकवि सामी भी आध्यात्मिक स्तर पर ऐसी ही सुहागिनी के लक्षण बतलाते हैं। प्रतीकात्मक शब्दों का प्रयोग करते हुए वे मानो सुहागिन स्त्री की व्याख्या करते हैं। वे कहते हैं कि वह स्त्री (भक्तिन) सुहागिन है, जो अपने प्रियतम परमेश्वर को संतुष्ट कर अपना बना लेती है और इसके लिए उसे प्रसादन आदि का प्रयोग करने की आवश्यकता नहीं होती। उसका सच्चा प्रेम-भाव अथवा सच्चा भक्ति भाव ही उसका शृंगार है, जो प्रभु को प्रसन्न करने के लिए पर्याप्त है। भला जिसने अपना हृदय और हृदय स्थित भाव ही प्रभु के सामने प्रकट कर दिये हैं, उसे प्रीतम को रिझाने के लिए अन्य किसी बाह्य आडबंर की आवश्यकता क्यों होगी ? सुहागिन का समर्पण भाव ही परमेश्वर को प्रिय होता है। ऐसी स्त्री ही सदा प्रिय-मिलन के अलौकिक आनंद का उपभोग करती है। प्रेम या भक्ति में यह एकरूपता, तल्लीनता, समता या लय-लीन होने का भाव महत्वपूर्ण है।

■